CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 18th July 2020, Revised on 29th July 2020, Accepted 7th August 2020

आलेख

आर्थिक और सामाजिक विकास में शिक्षा की भूमिका

* डॉ. अजय कृष्ण तिवारी
वरिष्ठ व्याख्याता एवं विभागाध्यक्ष
गांधी विद्या मंदिर, आईएएसई विश्वविद्यालय, सरदारशहर
Email- drajayhod@gmail.com, Mobile – 9251616036

मुख्य शब्द – *आर्थिक और सामाजिक विकास, मानव पूंजी में व्यवस्थित निवेश, गरीबी, श्रम उत्पादकता, शिक्षा, प्रौद्योगिकी, आय पर शिक्षा का प्रभाव, व्यापार, स्वास्थ्य आदि।*

सार संक्षेप

शिक्षा लोगों की खुद की और दुनिया की समझ को समृद्ध करती है। यह गुणवत्ता में सुधार करती है, उनके जीवन और व्यक्तियों और समाज के लिए व्यापक सामाजिक लाभ को बढ़ावा देती है। शिक्षा लोगों की उत्पादकता और रचनात्मकता और उद्यमशीलता और तकनीकी को बढ़ावा देती है। इसके अलावा यह आर्थिक और सामाजिक प्रगति हासिल करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, और आय के वितरण में सुधार के लिए एक आधार प्रदान करती है। शिक्षा हर दृष्टि से विकास के मूलभूत कारकों में से एक है। कोई देश मानव पूंजी में पर्याप्त निवेश के बिना सतत आर्थिक विकास नहीं प्राप्त कर सकता है।

परिचय

इस पत्र का मुख्य उद्देश्य आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका को दिखाना है और श्रम उत्पादकता, गरीबी, व्यापार, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, आय पर शिक्षा का प्रभाव, वितरण और पारिवारिक संरचना। शिक्षा विकास के लिए एक आधार प्रदान करती है, हमारे आर्थिक और सामाजिक कल्याण का अधिकांश हिस्सा निर्मित करती है। यह कुंजी है बढ़ती आर्थिक दक्षता और सामाजिक स्थिरता, मूल्य और दक्षता में वृद्धि करके उनके श्रम से, यह गरीबों को गरीबी से ऊपर उठाने में मदद करती है। यह समग्र उत्पादकता को बढ़ाती है और श्रम बल का बौद्धिक लचीलापन सुनिश्चित करने में मदद करती है, कि एक देश प्रतिस्पर्धी है दुनिया के बाजारों में अब बदलती तकनीकों और उत्पादन विधियों की विशेषता महत्वपूर्ण है। मानव जीवन, शिक्षा के प्रारंभ में असमान सामाजिक या जातीय समूहों के साथ एक बच्चे का एकीकरण, बढ़ाना, राष्ट्र निर्माण और पारस्परिक सहिष्णुता में महत्वपूर्ण योगदान देती है। एक राष्ट्र जो अपनी महिलाओं को शिक्षित नहीं करता है वह प्रगति नहीं कर सकता है.... हासी बेक्टास वेलि (1208–1270)।

आर्थिक विकास में शिक्षा का महत्व

उन्नीसवीं शताब्दी से पहले, मानव पूंजी में व्यवस्थित निवेश पर विचार नहीं किया गया था, किसी भी देश में विशेष रूप से यह महत्वपूर्ण है। स्कूली शिक्षा, नौकरी के दौरान प्रशिक्षण, और अन्य पर व्यय निवेश के समान रूप में काफी छोटे थे। इस दौरान यह मौलिक रूप से बदलने लगा नए माल के विकास और अधिक कुशल विज्ञान के साथ उत्पादन के तरीके, पहले ग्रेट ब्रिटेन में, और फिर धीरे–धीरे अन्य देशों में शिक्षा सभी स्तरों पर प्रदान की जाती हैं।

बीसवीं शताब्दी के दौरान, शिक्षा, कौशल, और ज्ञान का अधिग्रहण हो गया है, किसी व्यक्ति और देश की उत्पादकता के महत्वपूर्ण निर्धारक भी इसे कह सकते हैं, मानव पूंजी इस अर्थ में इस सदी में समान रूप से इसकी पहुंच कई देशो के प्राथमिक निर्धारक, जीवन यापन का मानक कौशल को विकसित करने और उसका उपयोग करने में कितना अच्छा है, ज्ञान और स्वास्थ्य को आगे बढ़ाने और राष्ट की आबादी को शिक्षित करना जिसे विकासशील देश प्रभावी बना सकते हैं । पिछले दशकों में बुनियादी शिक्षा तक पहुंच में असाधारण विस्तार देखा गया है। कई देश अब इसकी पहुंच में और वृद्धि के कगार पर है। माध्यमिक और उच्च शिक्षा और गुणवत्ता में शानदार सुधार लाने में शिक्षा सभी स्तरों पर प्रदान की जाती है। छात्रों की बढ़ती संख्या के रूप में अपने मूल उद्देश्य को पूरा करें जिस्से उनकी क्षमता, शिक्षा, उच्च स्तर पर शिक्षा के लिए उनकी मांग समान रूप से बढ़ रही है। लड़कियों को शिक्षित करना और महिलाएं शायद सबसे प्रभावी निवेश है, जिसे विकासशील देश प्रभावी बना सकते हैं, घर के बाहर महिलाएं काम करती हैं या नहीं, यह सकारात्मक पारिश्रमिक बनाता है, बेहतर पारिवारिक स्वास्थ्य और पोषण, बेहतर जन्म दर निर्धारित करने में, निर्मित वस्तुओं के लिए दुनिया के बाजारों में शिक्षा सभी स्तरों पर सबसे प्रभावी निवेश है। उनकी क्षमता इन बाजारों में प्रतिस्पर्धा और वैश्वीकरण में सेवा बाजार की उत्कृष्टता पर निर्भर करेगा, एक विस्तृत श्रृंखला मानव पूंजी को प्रतियोगिता में लाते हैं। यह सुनिश्चित करना कि सभी नागरिक शिक्षित हों, बुनियादी स्तर से परे समस्या को सुलझाने के कौशल की एक विस्तृत श्रृंखला के कई स्तरों पर और कुछ विश्व स्तर के पेशेवर कौशल में सुधार के लिए नए पाठ्यक्रम की आवश्यकता होगी , बच्चों की शैक्षिक प्राप्ति में वृद्धि को देश में बेहतर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, और शैक्षणिक विधियाँ जो उच्चतर संज्ञानात्मक कौशल को प्रोत्साहित करती हैं जिसे विकासशील देश प्रभावी बना सकते हैं।

मानव पूंजी निवेश और आर्थिक विकास

बिना किसी मानव पूंजी निवेश के किसी भी देश ने निरंतर आर्थिक विकास हासिल नहीं किया है। पिछले अध्ययनों ने मानव पूंजी निवेश के विभिन्न रूपों को सुंदर रिटर्न दिखाया है.... पूंजी संचय, बुनियादी शिक्षा, अनुसंधान, प्रशिक्षण, सीखने–करने की योग्यता जिसे विकासशील देश प्रभावी बना सकते हैं। जहाँ असमान शिक्षा का नकारात्मक स्तर है, अधिकांश देशों में जहाँ प्रति व्यक्ति आय पर प्रभाव, इसके अलावा, मानव पूंजी के लिए नियंत्रण परिसंपत्ति के अनुरूप उचित कार्यात्मक रूप विनिर्देशों का वितरण और उपयोग आवंटन मॉडल प्रति व्यक्ति आय पर औसत शिक्षा के प्रभावों के लिए एक अंतर बनाता है, ऐसा करने में विफलता औसत शिक्षा के महत्वहीन और नकारात्मक प्रभाव की ओर ले जाती है। मानव पूंजी में निवेश विकास पर बहुत अधिक प्रभाव डाल सकती है, अधिक से अधिक शिक्षा और कौशल का उपयोग करने की अनुभवजन्य संभावनाएं हैं।

पहले के नियोक्लासिकल मॉडल में, शिक्षा को उत्पादन के लिए एक प्रमुख इनपुट नहीं माना जाता था और इसलिए विकास मॉडल (हारबर, 1998 1–2) में शामिल नहीं किया गया था। 1960 के दशक में बढ़ते हुए अनुभवजन्य साक्ष्य ने आर्थिक विचार में मानव निवेश क्रांति को प्रेरित किया (बोमन, 1960)। शिक्षा पर (शुल्त्स, 1961) और (डेनिसन, 1962. 67) के मदरसा शिक्षा कार्यों का नेतृत्व किया, ग्रोथ अकाउन्टिंग स्टडीज की श्रृंखला शिक्षा के अस्पष्ट योगदान को इंगित करती है, पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं के आर्थिक विकास में अवशिष्ट, अन्य अध्ययनों के प्रभाव को देखा कमाई पर शिक्षा या रिटर्न की अनुमानित निजी दर (बेकर 1964, माइनर 1974) इंगित करती है, 1984 में 29 विकासशील देशों को शामिल करते हुए विकास लेखांकन अध्ययनों का सर्वेक्षण अनुमानित पाया गया मेक्सिको में 1 प्रतिशत से कम आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान घाना में अधिक से अधिक 23 प्रतिशत (साइकेरोपौलोस, 1984) इंगित करती है।

कृषि विकास में शिक्षा का महत्व

कृषि में, किसानों के बीच उत्पादकता पर शिक्षा के सकारात्मक प्रभावों का सुझाव देता है कि आधुनिक तकनीकों का उपयोग, जैसा कि उपयोग करने वालों के बीच उम्मीद की जा सकती है, उनके पारंपरिक तरीके। थाईलैंड में, स्कूली शिक्षा के चार या अधिक वर्षों वाले किसान तीन थे कम शिक्षित किसानों की तुलना में उर्वरक और अन्य आधुनिक आदानों को अपनाने की अधिक संभावना है (बर्ड्सल, 1999 75–79)। इसी तरह, नेपाल में, कम से कम सात साल पूरे होने पर स्कूली शिक्षा में एक चौथाई से अधिक गेहूं में उत्पादकता बढ़ी, और चावल में 13 (जैमिसन और मॉक, 1994 13)। तकनीकी क्षमता और तकनीकी परिवर्तन में शिक्षा का भी महत्वपूर्ण योगदान है उनके उद्योग। श्रीलंका में कपड़ों और इंजीनियरिंग उद्योगों के सांख्यिकीय विश्लेषण का हवाला देते हैं सिर्फ

एक उदाहरण से पता चला है कि श्रमिकों और उद्यमियों के कौशल और शिक्षा का स्तर फर्म के तकनीकी परिवर्तन की दर से सकारात्मक रूप से संबंधित थे (क्मतंदपलंहसं, 1995)। अकेले शिक्षा, निश्चित रूप से एक अर्थव्यवस्था को बदल नहीं सकती है। तकनीकी क्षमता और गुणवत्ता निवेश, घरेलू और विदेशी व्यापार, समग्र नीति वातावरण के साथ मिलकर, फार्म का आर्थिक प्रदर्शन के अन्य महत्वपूर्ण निर्धारक है।

शिक्षा और मानव विकास का स्तर

फिर भी मानव विकास का स्तर इन कारकों पर भी असर पड़ता है, नीति निर्धारण और निवेश निर्णयों की गुणवत्ता है नीति निर्माताओं और प्रबंधकों दोनों की शिक्षा से प्रभावित हुए, इसके अलावा, सिस्टम के मानव पूंजी की आपूर्ति होने पर घरेलू और विदेशी निवेश दोनों की मात्रा बड़ी होने की संभावना है। एक वृहद संभावना के लिए, नए विकास के सिद्धांतों 'का उद्देश्य तकनीकी प्रगति को प्रोत्साहित करना है, इन समान प्रभावों में से कुछ को शामिल करते हुए, शिक्षा के साथ–साथ सीखने पर जोर देना और अनुसंधान एवं विकास की संभावना है। लुकास (1998) के अनुसार, शिक्षा के असमान वितरण एक नकारात्मक प्रभाव है, अधिकांश देशों में प्रति व्यक्ति आय पर इसका प्रभाव पड़ता है, इसके अलावा, मानव पूंजी के लिए नियंत्रण परिसंपत्ति के अनुरूप उचित कार्यात्मक रूप विनिर्देशों का वितरण और उपयोग आवंटन मॉडल प्रति व्यक्ति आय पर औसत शिक्षा के प्रभावों के लिए एक अंतर बनाता है, ऐसा करने में विफलता औसत शिक्षा के महत्वहीन और नकारात्मक प्रभाव की ओर ले जाती है। देश में बेहतर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, और शैक्षणिक विधियाँ जो उच्चतर संज्ञानात्मक कौशल को प्रोत्साहित करती हैं जिसे विकासशील देश मानव विकास के स्तर को प्रभावी बना सकते हैं।

शिक्षा और उत्पादकता

स्पष्ट रूप से किसी भी देश के भीतर शैक्षिक प्रावधान मुख्य घटक का प्रतिनिधित्व करते हैं, उस देश के उत्पादन और निर्यात की संरचना और विकास के निर्धारक और विदेशी प्रौद्योगिकी को उधार लेने के लिए सिस्टम की क्षमता में एक महत्वपूर्ण घटक का गठन करना प्रभावी रूप से एक सकारात्मक प्रतिक्रिया है ... उदाहरण के लिए स्वास्थ्य और पोषण, और प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा सभी विकास के स्तर को बढ़ाते हैं, श्रमिकों की उत्पादकता, ग्रामीण और शहरीय माध्यमिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा , कौशल और प्रबंधकीय क्षमता के अधिग्रहण की सुविधाये प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा का समर्थन करता है, बुनियादी विज्ञान, प्रौद्योगिकी शिक्षा का विकास, प्रौद्योगिकी आयात का उपयुक्त चयन और घरेलू अनुकूलन और प्रौद्योगिकियों का विकास माध्यमिक और प्राथमिक शिक्षा भी सरकार, कानून और, प्रमुख संस्थानों के विकास में महत्वपूर्ण तत्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं वित्तीय प्रणाली, आर्थिक विकास के लिए सभी आवश्यक उत्पादकता को प्रभावित करते हैं।

शिक्षा और आय

बेहतर शिक्षा से लेकर अधिक आय व्यापक रूप में एक सकारात्मक प्रतिक्रिया है, जो बदले में, विकास की उच्च दर का अवसर लेने की संभावना है। चूंकि शिक्षा अधिक व्यापक रूप से आधारित हो जाती है, कम आय वाले लोग आर्थिक अवसरों की तलाश करने में बेहतर हैं, उदाहरण के लिए, एक अध्ययन लैटिन के 18 देशों में स्कूली शिक्षा, आय की असमानता और गरीबी के बीच संबंध 1980 के दशक में पाया कि श्रमिकों की आय में भिन्नता का एक चौथाई हिस्सा था, स्कूली शिक्षा में बदलाव के हिसाब से यह निष्कर्ष निकाला है कि म्कनबंजपवद स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण है ,आय की समानता पर सबसे मजबूत प्रभाव के साथ परिवर्तनशील एक और अध्ययन सुझाव दिया कि कम से कम माध्यमिक शिक्षा के साथ श्रम बल में एक प्रतिशत की वृद्धि 6 और 15: के बीच 40 और 60: से नीचे की आय का हिस्सा बढ़ाएगा क्रमशः (बोरग्यूग्नन और मॉरिसन, 1990) के निर्धारकों की एक जांच 36 देशों में आय वितरण महत्वपूर्ण होने के लिए माध्यमिक नामांकन दर पाया गया (बरग्यूगन, 1995 53–86)।

शिक्षा और प्रति व्यक्ति आय वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि..... इसके प्रभाव से शिक्षा, प्रति व्यक्ति आय वृद्धि को प्रभावित कर सकती है । उदाहरण के लिए, अस्सी के दशक के मध्य में चौदह अफ्रीकी देशों का एक अध्ययन लगभग सभी देशों में महिला स्कूली शिक्षा और प्रजनन क्षमता के बीच एक नकारात्मक संबंध दिखाया गया है, प्राथमिक शिक्षा के साथ लगभग आधे देशों में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है , माध्यमिक शिक्षा ने हमेशा प्रजनन

क्षमता को कम कर दिया (बेहरामन और वोल्फ 1987)। कम प्रजनन क्षमता के मामले में तीनों सफल देश, केन्या, बोत्सवाना और जिम्बाब्वे में महिला स्कूली शिक्षा का स्तर सबसे कम था बाल मृत्यु दर (।पदेवतजी 1995)। जनसंख्या वृद्धि दर का आर्थिक विकास व प्रति व्यक्ति आय पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है राष्ट्र के प्राकृतिक संसाधन तथा जीडीपी पर अधिक जनसंख्या दबाव के कारण निम्न प्रति व्यक्ति आय की संभावना बढ़ती है, शिक्षा के विकास से इसमें सकारात्मक प्रभाव देखे गए हैं।

मानव पूंजी और परिवार

शिक्षा और परिवार..... मानव पूंजी कहां से आती है ? मानव में एक सफल निवेश क्या है ? व्यक्तिगत या राष्ट्रीय स्तर पर पूंजी ? एक परिवार के साथ शुरू करना है, यह है एक अच्छे समाज और आर्थिक सफलता की नींव। परिवार समय के साथ अलग हो गए हैं, लेकिन वे अभी भी आधुनिक अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण हैं। मानव पूंजी को समझने के लिए, आपके पास है परिवार में वापस जाने के लिए अपरिहार्य है, क्योंकि यह ऐसे परिवार हैं जो अपने बच्चों के बारे में चिंतित हैं और कोशिश करते हैं, अपने बच्चों की शिक्षा और मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए उनके पास जो भी संसाधन हैं, वे परिवार किसी भी मुक्त समाज में मूल्यों के प्रमुख प्रवर्तक हैं और यहां तक कि मुक्त समाजों में भी नहीं है। परिवार कई तरह के फैसले करते हैं। एक यह है कि क्या कई बच्चे हैं या कम हैं बच्चे। इसके अलावा कुछ प्रत्येक बच्चे के लिए अधिक करने की कोशिश करते हैं।

निष्कर्ष

शिक्षा आर्थिक विकास के लिए अपरिहार्य है। कोई आर्थिक विकास संभव नहीं है अच्छी शिक्षा के बिना। एक संतुलित शिक्षा प्रणाली न केवल आर्थिक विकास को बढ़ावा देती है, बच्चों की शैक्षिक प्राप्ति में वृद्धि को देश में बेहतर शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, और शैक्षणिक विधियाँ जो उच्चतर संज्ञानात्मक कौशल को प्रोत्साहित करती हैं जिसे विकासशील देश प्रभावी बना सकते हैं। बेशक, शिक्षा और बेहतर स्वास्थ्य और जीवन प्रत्याशा के बीच अधिक आर्थिक विकास को प्रेरित करते हैं, मानव पूंजी निवेशों पर वापसी की दर अपेक्षित होने पर अधिक होती है। निम्न और मध्यम आय वाले देशों की अर्थव्यवस्था ऐतिहासिक रूप से तेजी से दरें बढ़ रही है। शिक्षा के विस्तार में प्रगति और अब स्कूली शिक्षा ने इसमें योगदान दिया है, विकास और शिक्षा के विस्तार करने से विकासशील देशों में गरीबी को कम करने में मदद मिली है। अतः हम गहन अध्ययन व अनुसंधान के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक उत्थान व विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान नितांत आवश्यक है।

ग्रन्थसूची

1..आइंसवर्थ, एम.के. बीगल और Nyamete (1995), द इम्पैक्ट ऑफ फीमेल स्कूलिंग प्रजनन और गर्भनिरोधक, एलएसएमएस वर्किंग पेपर्स 110, वाशिंगटन, डीसीरू विश्व बैंक।

2..बेकर, ग्रे एस (1964), ह्यूमन कैपिटल, न्यूयॉर्क, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।

3..बेकर, ग्रे एस (1998), ह्यूमन कैपिटल एंड पॉवर्टी, रिलिजन एंड लिबर्टी आर्काइव, शिकागो शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस।

4..बेहरामन, जे आर आर (1990), मानव संसाधन नेतृत्व विकास, मुद्दों की समीक्षा और विकास, नई दिल्ली, भारत ।त्ज्म्च ६ प्स्व।

5..बेन–डेविड, डी। और एम। लूवी, (1995), फ्री ट्रेड एंड लॉन्ग रन ग्रोथ, सीईपीआर काम कर रहे हैं 1183।

6..बर्ड्सल, एन। (1993), आर्थिक विकास में सामाजिक विकास, विश्व बैंक नीति शोध कार्य पत्रों, डब्ल्यूपीएस 1123, वाशिंगटन डीसी।

7..Bourguignon F- (1995), "इक्विटी एंड इकोनॉमिक ग्रोथरू स्थायी प्रश्न और परिवर्तन मानव विकास रिपोर्ट, यूएनडीपी

8..ग्रॉसमैन, जीन एम। और एलहन हेल्पमैन, (1989), ग्रोथ एंड वेलफेयर इन ए स्माल ओपन इकॉनोमी, छठम्त वर्किंग पेपर 2970।

9..जैमिसन, डी। एंड पी। मॉक (1994), नेपाल में किसान शिक्षा और किसान दक्षता स्कूल की भूमिका, विश्व विकास, 12।

10..शुल्त्स, टी। डब्ल्यू। (1961), ष्मानव पूंजी में निवेशष् अमेरिकी आर्थिक समीक्षा, 51 (1)।

11..तिलक, जे.बी., (1989), "शिक्षा और इसका संबंध आर्थिक विकास, गरीबी और आय से है वितरण पिछले साक्ष्य और आगे का विश्लेषण वर्ल्ड बैंक वर्किंग पेपर्स 46।

*** Corresponding Author**
डॉ. अजय कृष्ण तिवारी
वरिष्ठ व्याख्याता एवं विभागाध्यक्ष
गांधी विद्या मंदिर, आईएएसई विश्वविद्यालय, सरदारशहर
Email- drajayhod@gmail.com, Mobile – 9251616036